



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

“व्यक्तित्व मनोविज्ञान एवं सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार: एक सैद्धान्तिक विश्लेषण”

सृष्टि गुप्ता (शोधार्थी), मनोविज्ञान विभाग,

जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

सारांश: व्यक्तित्व मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक विशिष्ट एवं व्यापक शाखा है, जिसका प्रमुख उद्देश्य मानव व्यक्तित्व की प्रकृति, उसके व्यवहारिक स्वरूप, मानसिक प्रक्रियाओं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ उसके अंतर्संबंधों का वैज्ञानिक विश्लेषण करना है। प्रत्येक मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता, भावनात्मक अभिव्यक्ति, जीवन मूल्यों, सामाजिक व्यवहार, निर्णय क्षमता तथा परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया के आधार पर अपनी एक विशिष्ट पहचान निर्मित करता है। यही विशिष्टताएँ उसके व्यक्तित्व की आधारशिला मानी जाती हैं। व्यक्तित्व का विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक अनुभवों से प्रभावित होती रहती है। समकालीन समाज में तीव्र सामाजिक परिवर्तन, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, शिक्षा प्रणाली में निरंतर हो रहे परिवर्तन तथा जीवन शैली में आए व्यापक बदलावों ने व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। विशेषकर छात्र समुदाय के संदर्भ में व्यक्तित्व का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो गया है, क्योंकि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियाँ, सामाजिक सहभागिता, नैतिक आचरण, नेतृत्व कौशल, आत्मविश्वास तथा भविष्य के प्रति उनकी दृष्टि उनके व्यक्तित्व की प्रकृति से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है।

भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार की अवधारणा एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक विमर्श के रूप में उभरकर सामने आती है। सहज व्यक्तित्व व्यवहार उन गुणों को अभिव्यक्त करता है, जो व्यक्ति को संवेदनशील, सहृदय, सहयोगी, उदार तथा सामाजिक रूप से समायोजित बनाते हैं। इसके अंतर्गत विनम्रता, सहिष्णुता, भावनात्मक संतुलन एवं मानवीय दृष्टिकोण जैसे गुण प्रमुख रूप से सम्मिलित होते हैं। इसके विपरीत कठोर व्यक्तित्व व्यवहार व्यक्ति की मानसिक दृढ़ता, आत्म-अनुशासन, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, आत्म-नियंत्रण तथा निर्णय लेने की क्षमता को परिलक्षित करता है। यह धारणा उचित नहीं है कि कठोर व्यवहार केवल नकारात्मक गुणों का प्रतिनिधित्व करता है अथवा सहजता केवल सकारात्मक पक्ष को अभिव्यक्त करती है। वस्तुतः व्यक्तित्व के ये दोनों आयाम एक-दूसरे के पूरक हैं और व्यक्ति के समग्र एवं संतुलित विकास में समान रूप से योगदान प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द : व्यक्तित्व मनोविज्ञान, सहज व्यक्तित्व व्यवहार, कठोर व्यक्तित्व व्यवहार, छात्र व्यक्तित्व, व्यवहारिक विश्लेषण, मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त।

प्रस्तावना : मानव व्यक्तित्व का अध्ययन प्राचीन काल से ही दर्शन, शिक्षा एवं मनोविज्ञान के विद्वानों के लिए विशेष आकर्षण का विषय रहा है। व्यक्तित्व को केवल व्यक्ति के बाह्य आचरण अथवा शारीरिक विशेषताओं तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह उसके मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक गुणों के समन्वित स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके संपूर्ण जीवन व्यवहार को प्रभावित करता है तथा समाज के साथ उसके समायोजन एवं पारस्परिक संबंधों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'व्यक्तित्व' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'पर्सोना' (Persona) शब्द से मानी जाती है, जिसका आशय उस स्वरूप अथवा भूमिका से है, जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज में स्वयं को अभिव्यक्त करता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने इस अवधारणा को अधिक व्यापक रूप प्रदान करते हुए व्यक्तित्व को व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक विशेषताओं के संगठित एवं गतिशील समुच्चय के रूप में स्वीकार किया है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों का जीवन अनेक प्रकार की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक चुनौतियों से घिरा हुआ है। तीव्र प्रतिस्पर्धा, व्यावसायिक अनिश्चितता, सामाजिक अपेक्षाएँ, पारिवारिक दायित्व तथा डिजिटल संसाधनों के बढ़ते प्रभाव ने छात्र व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया को अत्यधिक जटिल बना दिया है। ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का अध्ययन न केवल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि शैक्षिक नीति निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

व्यक्तित्व मनोविज्ञान की अवधारणा : व्यक्तित्व मनोविज्ञान उस वैज्ञानिक अध्ययन को संदर्भित करता है, जिसके माध्यम से मानव व्यक्तित्व की संरचना, विकासात्मक प्रक्रियाओं, व्यवहारिक प्रवृत्तियों तथा व्यक्तिगत भिन्नताओं का विश्लेषण किया जाता है। यह शाखा इस बात का अध्ययन करती है कि व्यक्ति किस प्रकार विभिन्न परिस्थितियों में विचार करता है, भावनात्मक अनुभव प्राप्त करता है तथा व्यवहारिक प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार, व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर स्थित मनो-शारीरिक प्रणालियों का एक ऐसा गतिशील संगठन है, जो उसके विशिष्ट व्यवहार एवं पर्यावरणीय अनुकूलन को प्रभावित करता है। रेमण्ड कैटल ने व्यक्तित्व को उस आधार के रूप में परिभाषित किया है, जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति के भविष्य के व्यवहार का वैज्ञानिक पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। हान्स आइज़ेंक ने व्यक्तित्व को व्यक्ति के स्वभाव, बौद्धिक स्तर, चरित्र एवं शारीरिक संरचना के अपेक्षाकृत स्थायी संगठन के रूप में वर्णित किया है। वहीं व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक जॉन बी. वॉटसन ने व्यक्तित्व को व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित व्यवहारों एवं क्रियात्मक प्रतिक्रियाओं के समग्र रूप में समझाया है। इन विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि व्यक्तित्व किसी एक गुण अथवा व्यवहार का नाम नहीं है, बल्कि यह अनेक मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारिक घटकों की परस्पर अन्तःक्रिया से निर्मित एक जटिल एवं गतिशील प्रणाली है।

सहज व्यक्तित्व व्यवहार का स्वरूप : सहज व्यक्तित्व व्यवहार से अभिप्राय व्यक्ति के ऐसे व्यवहारिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों से है, जो उसकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति, सामाजिक संवेदनशीलता तथा मानवीय मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सामान्यतः सरल, सौम्य, संवेदनशील एवं सहयोगी प्रवृत्ति के होते हैं। वे परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को सहज रूप से ढालने की क्षमता रखते हैं तथा दूसरों के प्रति सम्मान, सद्भाव एवं सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखते हैं। सामाजिक संबंधों के निर्माण एवं संरक्षण में भी ऐसे व्यक्तियों की भूमिका प्रभावशाली मानी जाती है। सहज व्यक्तित्व व्यवहार के अंतर्गत भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा नैतिक चेतना का समन्वित स्वरूप देखने को मिलता है। ऐसे व्यक्तियों में दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है, जिसके कारण वे समूह में सामंजस्य स्थापित करने में सफल रहते हैं। सामान्यतः सहज व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में भावनात्मक स्थिरता, सहनशीलता,

सामाजिक समायोजन, विनम्रता, परोपकारिता, सकारात्मक चिंतन तथा मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता जैसे गुण विद्यमान होते हैं। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो सहज व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी समूहगत गतिविधियों, सहपाठियों के साथ स्वस्थ संबंध स्थापित करने, नेतृत्व के सहयोगात्मक स्वरूप को विकसित करने तथा मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में अधिक सफल पाए जाते हैं। उनकी सामाजिक सहभागिता तथा संवाद क्षमता भी अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है, जो उनके व्यक्तित्व के संतुलित विकास में सहायक सिद्ध होती है।

कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का स्वरूप : कठोर व्यक्तित्व व्यवहार को प्रायः केवल नकारात्मक अर्थों में समझ लिया जाता है, जबकि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसका व्यापक एवं सकारात्मक स्वरूप भी विद्यमान है। व्यक्तित्व की कठोरता का आशय अनेक परिस्थितियों में मानसिक दृढ़ता, आत्म-अनुशासन, संकल्पशीलता एवं लक्ष्य प्राप्ति के प्रति समर्पण से होता है। यह व्यक्ति को चुनौतियों का सामना करने, कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने तथा अपने उद्देश्यों के प्रति निरंतर प्रयासरत रहने की प्रेरणा प्रदान करती है। कठोर व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में आत्मविश्वास, कार्य के प्रति गंभीरता, समयबद्धता, आत्म-नियंत्रण तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता जैसी विशेषताएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। ऐसे व्यक्ति सामान्यतः अपने उद्देश्यों के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण रखते हैं तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धैर्य एवं मानसिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास करते हैं। नेतृत्व एवं संगठनात्मक कार्यों में भी उनकी निर्णयात्मक क्षमता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यद्यपि व्यक्तित्व में दृढ़ता एवं अनुशासन आवश्यक गुण हैं, तथापि इनका अत्यधिक एवं असंतुलित विकास व्यक्ति के सामाजिक एवं भावनात्मक जीवन को प्रभावित कर सकता है। यदि कठोरता में लचीलापन एवं संवेदनशीलता का अभाव हो जाए, तो व्यक्ति सामाजिक दूरी, असहिष्णुता, आक्रामकता अथवा भावनात्मक कठोरता की ओर उन्मुख हो सकता है। इसलिए व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से संतुलित कठोरता को ही वांछनीय माना जाता है।

सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार : एक तुलनात्मक दृष्टि : व्यक्तित्व के सहज एवं कठोर आयामों को पूर्णतः परस्पर विरोधी मानना उचित नहीं है। आधुनिक व्यक्तित्व मनोविज्ञान इन्हें व्यवहार के दो पूरक पक्षों के रूप में स्वीकार करता है, जो व्यक्ति के समग्र विकास में समान रूप से योगदान प्रदान करते हैं। व्यवहारिक परिस्थितियों के अनुसार व्यक्ति में दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ विभिन्न स्तरों पर अभिव्यक्त हो सकती हैं। एक संतुलित एवं परिपक्व व्यक्तित्व में संवेदनशीलता एवं मानसिक दृढ़ता का सामंजस्य पाया जाता है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक रूप से सहयोगी होने के साथ-साथ आवश्यक परिस्थितियों में आत्म-अनुशासित एवं निर्णयक्षम भी होता है। वह भावनात्मक रूप से परिपक्व होने के साथ अपने लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहता है। इसी प्रकार सामाजिक समायोजन एवं आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति एवं नेतृत्व क्षमता तथा मानवीय दृष्टिकोण एवं अनुशासन जैसे गुण एक-दूसरे के पूरक बनकर व्यक्तित्व को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। व्यक्तित्व विकास का वास्तविक उद्देश्य इन दोनों व्यवहारिक आयामों के मध्य संतुलन स्थापित करना है, जिससे व्यक्ति व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में सफलतापूर्वक अपनी भूमिका का निर्वहन कर सके।

व्यक्तित्व मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धान्तों के आलोक में सहज-कठोर व्यवहार: मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण : सिगमंड फ्रायड ने व्यक्तित्व के अध्ययन को अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं से जोड़ते हुए उसके तीन प्रमुख घटकों—इड (Id), ईगो (Ego) तथा सुपर ईगो (Superego)—का प्रतिपादन किया। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार उसकी अंतर्निहित इच्छाओं, सामाजिक अपेक्षाओं एवं नैतिक मूल्यों के मध्य होने वाले मानसिक समन्वय का परिणाम होता है। इड व्यक्ति की मूलभूत एवं जैविक इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि ईगो वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार को नियंत्रित करता है। दूसरी ओर, सुपर ईगो व्यक्ति के नैतिक आदर्शों एवं सामाजिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। सहज एवं कठोर व्यक्तित्व

व्यवहार का अध्ययन इस सिद्धान्त के आधार पर मानसिक नियंत्रण, सामाजिक अनुकूलन तथा नैतिक चेतना के संदर्भ में किया जा सकता है।

गुण आधारित सिद्धान्त : व्यक्तित्व के गुणात्मक अध्ययन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने में ऑलपोर्ट, कैटल एवं आइज़ेक का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में कुछ स्थायी व्यक्तित्व गुण विद्यमान होते हैं, जो उसके व्यवहार को विशिष्ट बनाते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार सहजता एवं कठोरता व्यक्तित्व के विभिन्न गुणात्मक संयोजनों का परिणाम हैं। किसी व्यक्ति में सामाजिकता, सहानुभूति एवं भावनात्मक संतुलन जैसे गुण अपेक्षाकृत अधिक हो सकते हैं, जबकि दूसरे व्यक्ति में आत्म-अनुशासन, दृढ़ता एवं नेतृत्व क्षमता अधिक विकसित हो सकती है। इन व्यक्तित्व विशेषताओं का अध्ययन मनोवैज्ञानिक परीक्षणों एवं व्यवहारिक मापन विधियों के माध्यम से किया जा सकता है।

व्यवहारवादी दृष्टिकोण : व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को मुख्यतः अधिगम एवं पर्यावरणीय प्रभावों का परिणाम माना है। जॉन बी. वॉटसन एवं बी. एफ. स्किनर के अनुसार व्यक्ति का अधिकांश व्यवहार अनुभवों एवं सामाजिक परिस्थितियों के माध्यम से विकसित होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तित्व जन्मजात रूप से निर्धारित नहीं होता, बल्कि व्यक्ति अपने सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण से व्यवहार सीखता है। परिवार, विद्यालय, पुरस्कार एवं प्रोत्साहन जैसी परिस्थितियाँ छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार को भी सामाजिक अधिगम एवं अनुभवजन्य प्रक्रियाओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

सामाजिक अधिगम सिद्धान्त : अल्बर्ट बंडूरा ने व्यक्तित्व विकास में अवलोकनात्मक अधिगम (Observational Learning) की भूमिका को विशेष महत्व प्रदान किया है। उनके अनुसार व्यक्ति अपने आसपास उपस्थित सामाजिक प्रतिमानों का अनुकरण करके व्यवहार सीखता है। छात्र अपने शिक्षकों, अभिभावकों, मित्रों एवं सामाजिक परिवेश से अनेक व्यवहारिक विशेषताओं को ग्रहण करते हैं। आत्म-प्रभावकारिता (Self-Efficacy) की भावना व्यक्तित्व विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि यही व्यक्ति में आत्मविश्वास एवं उपलब्धि की प्रेरणा को विकसित करती है। सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार दोनों ही सामाजिक अनुभवों एवं पर्यावरणीय प्रभावों से प्रभावित होते हैं।

मानवतावादी दृष्टिकोण : कार्ल रोजर्स एवं अब्राहम मैस्लो ने व्यक्तित्व के अध्ययन को मानव की सकारात्मक क्षमताओं एवं आत्म-विकास की संभावनाओं से जोड़कर देखा। मैस्लो के अनुसार आत्म-साक्षात्कार मानव विकास की सर्वोच्च अवस्था है, जबकि रोजर्स ने आत्म-अवधारणा एवं बिना शर्त सकारात्मक स्वीकृति को व्यक्तित्व विकास का आधार माना है। मानवतावादी दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व का वास्तविक विकास तभी संभव है जब व्यक्ति को अपनी क्षमताओं के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त हो। सहज व्यक्तित्व व्यवहार व्यक्ति की मानवीय संवेदनशीलता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रकट करता है, जबकि संतुलित कठोरता उसे आत्म-विकास, लक्ष्य प्राप्ति एवं जीवन की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करती है।

भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार : भारतीय चिंतन परंपरा में व्यक्तित्व को केवल व्यवहारिक विशेषताओं तक सीमित नहीं माना गया है, बल्कि इसके नैतिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आयामों को भी समान रूप से महत्व दिया गया है। भारतीय दर्शन में सत्त्व, रज एवं तम को मानव स्वभाव एवं व्यक्तित्व की मूल प्रवृत्तियों के रूप में स्वीकार किया गया है। भारतीय ग्रंथों एवं दार्शनिक परंपराओं में आत्म-संयम, समत्व भाव, करुणा, धैर्य, अनुशासन तथा नैतिक जीवन को आदर्श व्यक्तित्व की पहचान माना गया है। भारतीय शिक्षा दर्शन भी संतुलित एवं समग्र व्यक्तित्व विकास पर विशेष बल देता

है। भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सहज व्यक्तित्व व्यवहार को मानवीय संवेदनाओं, सहिष्णुता, सामाजिक सहयोग एवं नैतिकता के साथ जोड़ा जा सकता है। दूसरी ओर, कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का सकारात्मक स्वरूप आत्म-अनुशासन, धैर्य, मानसिक दृढ़ता एवं संकल्पशीलता के रूप में समझा जा सकता है। दोनों ही आयाम भारतीय जीवन मूल्यों के अनुरूप व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तित्व मनोविज्ञान के सैद्धान्तिक प्रतिमानों का समालोचनात्मक विवेचन : व्यक्तित्व मनोविज्ञान का क्षेत्र केवल व्यक्ति के बाह्य व्यवहार अथवा व्यक्तित्व गुणों के अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को भी समझने का प्रयास करता है, जो व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय एवं सामाजिक अनुकूलन को निरंतर प्रभावित करती रहती हैं। आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व एक परिवर्तनशील एवं गतिशील संरचना है, जिसका निर्माण जैविक प्रवृत्तियों, मानसिक प्रक्रियाओं, सामाजिक परिस्थितियों तथा सांस्कृतिक प्रभावों की परस्पर अंतःक्रिया से होता है। इसी कारण व्यक्तित्व के अध्ययन में किसी एक सिद्धान्त अथवा दृष्टिकोण को पर्याप्त नहीं माना जाता। व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए बहुआयामी एवं समन्वित दृष्टिकोण को अधिक उपयुक्त माना गया है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों ने व्यक्तित्व की प्रकृति एवं विकास को समझने में विशिष्ट योगदान प्रदान किया है। मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त ने अचेतन मन एवं मानसिक संघर्षों की भूमिका को स्पष्ट किया, गुण सिद्धान्त ने व्यक्तित्व के वैज्ञानिक मापन एवं वर्गीकरण को आधार प्रदान किया, व्यवहारवादी दृष्टिकोण ने अधिगम एवं पर्यावरणीय प्रभावों को महत्व दिया तथा मानवतावादी दृष्टिकोण ने व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं एवं आत्म-विकास की संभावनाओं को प्रमुखता प्रदान की।

सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण : यदि सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि इन्हें किसी एकल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के माध्यम से पूर्णतः नहीं समझा जा सकता। व्यक्ति का व्यवहार अनेक सामाजिक, भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का परिणाम होता है, जिसके कारण व्यक्तित्व के दोनों आयाम विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग रूपों में अभिव्यक्त हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, किसी विद्यार्थी का सहज व्यवहार उसके सामाजिक अनुभवों, भावनात्मक परिपक्वता, पारिवारिक संस्कारों एवं सहयोगात्मक वातावरण का परिणाम हो सकता है। इसके विपरीत उसकी कठोर व्यवहारिक प्रवृत्तियाँ आत्म-अनुशासन, लक्ष्य प्राप्ति के प्रति प्रतिबद्धता, मानसिक दृढ़ता तथा आत्म-नियंत्रण जैसी विशेषताओं से प्रभावित हो सकती हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूरक एवं बहुआयामी पक्ष हैं, जिनकी वैज्ञानिक व्याख्या के लिए समन्वित मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार की मनोवैज्ञानिक संरचना: मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार को एक निरंतर विकसित होने वाली व्यवहारिक प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। किसी भी व्यक्ति में इन दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ विभिन्न स्तरों पर विद्यमान होती हैं तथा परिस्थितियों के अनुसार उनकी अभिव्यक्ति में परिवर्तन होता रहता है। यही कारण है कि व्यक्तित्व को स्थिर एवं एकांगी मानने के स्थान पर गतिशील एवं परिस्थितिनिष्ठ मानना अधिक उपयुक्त माना जाता है। सहज व्यक्तित्व व्यवहार की संरचना में अनेक सकारात्मक मनोवैज्ञानिक घटक सम्मिलित होते हैं। इनमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक समायोजन की क्षमता, दूसरों के प्रति करुणा एवं सहानुभूति, स्वस्थ आत्म-अवधारणा, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना, सहयोगात्मक नेतृत्व शैली, प्रभावी संवाद कौशल तथा मानसिक लचीलेपन जैसी विशेषताएँ प्रमुख हैं। ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सामाजिक रूप से अधिक अनुकूलनशील एवं सहयोगात्मक माने जाते हैं। दूसरी ओर, कठोर व्यक्तित्व व्यवहार की मनोवैज्ञानिक संरचना में आत्म-अनुशासन, लक्ष्य केन्द्रित दृष्टिकोण, प्रभावी

निर्णय क्षमता, मानसिक दृढ़ता, परिस्थितियों में स्थिरता, आत्म-नियंत्रण, नेतृत्व एवं संगठनात्मक दक्षता तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्तियों जैसे गुण सम्मिलित होते हैं। ये गुण व्यक्ति को चुनौतियों का सामना करने तथा कठिन परिस्थितियों में सफलतापूर्वक कार्य करने की क्षमता प्रदान करते हैं। यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का आशय असामाजिकता, क्रूरता अथवा आक्रामकता से नहीं है। इसी प्रकार सहज व्यक्तित्व व्यवहार को दुर्बलता, संकोच अथवा निर्णय लेने में असमर्थता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था और व्यक्तित्व निर्माण : भारतीय शिक्षा व्यवस्था समय के साथ निरंतर परिवर्तनशील रही है। लंबे समय तक शैक्षिक संस्थानों में विद्यार्थियों की सफलता का मूल्यांकन मुख्यतः परीक्षा परिणामों एवं शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर किया जाता रहा, जिसके कारण उनके व्यक्तित्व के अनेक महत्वपूर्ण आयाम अपेक्षित रूप से विकसित नहीं हो सके। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह स्वीकार किया जा चुका है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को सामाजिक, नैतिक एवं व्यवहारिक रूप से सक्षम नागरिक के रूप में विकसित करना भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने विद्यार्थियों के समग्र विकास को शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य माना है। इसके अंतर्गत जीवनोपयोगी कौशलों, आलोचनात्मक चिंतन, भावनात्मक सशक्तिकरण, सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के भीतर ऐसी क्षमताओं के विकास की अपेक्षा करती है, जो उन्हें न केवल शैक्षणिक जीवन में सफल बनाएँ, बल्कि उन्हें सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करें। विद्यालय एवं विश्वविद्यालय आज केवल औपचारिक शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान नहीं रह गए हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, नैतिक चेतना एवं सामाजिक मूल्यों के निर्माण के प्रभावशाली केन्द्र बन चुके हैं। शिक्षण संस्थानों का वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा, नेतृत्व कौशल, सामाजिक व्यवहार तथा निर्णय क्षमता के विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी आवश्यकता ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण करना है, जो सामाजिक दृष्टि से संवेदनशील, नैतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध, नेतृत्व गुणों से सम्पन्न, विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम, मानसिक रूप से दृढ़ तथा सामाजिक विविधताओं के प्रति सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण रखने वाले हों। इन गुणों के संतुलित विकास के लिए व्यक्तित्व के सहज एवं कठोर दोनों आयामों के मध्य उचित सामंजस्य स्थापित किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

उत्तर प्रदेश एवं बिहार के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में व्यक्तित्व व्यवहार : उत्तर प्रदेश एवं बिहार भारतीय समाज एवं संस्कृति के ऐसे महत्वपूर्ण प्रदेश हैं, जिनकी ऐतिहासिक, भाषाई एवं शैक्षिक परम्पराओं ने भारतीय सभ्यता को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। दोनों राज्यों की सामाजिक संरचना में अनेक समानताओं के साथ-साथ क्षेत्रीय एवं सांस्कृतिक विविधताएँ भी विद्यमान हैं, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया पर ग्रामीण एवं शहरी परिवेश, आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक संरचना, सामाजिक मूल्यों तथा शैक्षिक अवसरों का गहरा प्रभाव पड़ता है। उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। इन उपलब्धियों के पीछे केवल उनकी बौद्धिक योग्यता ही उत्तरदायी नहीं होती, बल्कि उनकी मानसिक दृढ़ता, संघर्षशीलता, अनुशासनप्रियता तथा सामाजिक सहयोग की भावना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संयुक्त परिवार की परम्परा, सामुदायिक जीवन, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामाजिक सहयोग की भावना विद्यार्थियों में सहज व्यक्तित्व व्यवहार के विकास को प्रोत्साहित

करती है। दूसरी ओर, प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण तथा व्यावसायिक चुनौतियाँ विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन, लक्ष्याभिमुखता एवं मानसिक दृढ़ता जैसे कठोर व्यक्तित्व गुणों का विकास करती हैं।

डिजिटल युग और व्यक्तित्व विकास : वर्तमान समय को सूचना एवं प्रौद्योगिकी आधारित युग के रूप में परिभाषित किया जाता है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शैक्षिक संसाधनों तथा डिजिटल संचार माध्यमों ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया को अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया है। आज के विद्यार्थी वैश्विक स्तर पर उपलब्ध ज्ञान एवं संसाधनों तक सहज पहुँच रखते हैं, जिसके कारण उनकी सोच, दृष्टिकोण एवं सामाजिक व्यवहार में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता है। डिजिटल माध्यमों ने विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, प्रभावी संचार तथा वैश्विक दृष्टिकोण के विकास के अनेक अवसर प्रदान किए हैं। इसके माध्यम से नवाचार, रचनात्मक चिंतन तथा आत्म-अभिव्यक्ति को भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण एवं डिजिटल संसाधनों ने शिक्षा को अधिक सुलभ एवं लचीला बनाया है। हालाँकि, डिजिटल संस्कृति के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में सामने आए हैं। सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव, भावनात्मक अस्थिरता, स्वयं की दूसरों से निरंतर तुलना करने की प्रवृत्ति, डिजिटल संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता तथा व्यवहारिक आक्रामकता जैसी समस्याएँ विद्यार्थियों के मानसिक एवं सामाजिक विकास को प्रभावित कर सकती हैं। अतः वर्तमान समय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए डिजिटल साक्षरता के साथ-साथ भावनात्मक परिपक्वता एवं संतुलित जीवनशैली का विकास भी अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार के शैक्षिक निहितार्थ : शिक्षा मनोविज्ञान के संदर्भ में सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का अध्ययन अनेक व्यावहारिक उपयोगिताओं को स्पष्ट करता है। यदि शैक्षिक संस्थानों में व्यक्तित्व विकास संबंधी कार्यक्रमों को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ढंग से संचालित किया जाए, तो विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-अनुशासन, नैतिक चेतना, रचनात्मक चिंतन एवं जीवन कौशल जैसे गुणों का प्रभावी विकास किया जा सकता है। व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं की उपलब्धता, जीवन कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, समूहगत गतिविधियों एवं नेतृत्व प्रशिक्षण को बढ़ावा देना, योग एवं ध्यान जैसी भारतीय परम्पराओं का समावेश तथा मूल्यपरक शिक्षा को शैक्षणिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं संचार कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम भी विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं।

समालोचनात्मक विश्लेषण : व्यक्तित्व मनोविज्ञान के अधिकांश पाश्चात्य सिद्धान्त व्यक्तित्व को व्यक्तिगत उपलब्धियों, कार्य दक्षता एवं व्यवहारिक क्षमता के संदर्भ में समझने का प्रयास करते हैं। इसके विपरीत भारतीय मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक परम्पराएँ व्यक्तित्व को सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों तथा जीवन के संतुलित दृष्टिकोण से जोड़कर देखती हैं। भारतीय संदर्भ में व्यक्तित्व की अवधारणा व्यक्ति एवं समाज के मध्य संतुलित संबंधों को महत्व प्रदान करती है। इसी कारण भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए एक समन्वित एवं सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण को अपनाना अधिक उपयुक्त माना जाता है। सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार की अवधारणा भी इसी समन्वित दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करती है, क्योंकि यह व्यक्तित्व को किसी एक आयाम अथवा सकारात्मक-नकारात्मक वर्गीकरण तक सीमित नहीं करती, बल्कि उसकी बहुआयामी एवं संतुलित प्रकृति को स्वीकार करती है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व मनोविज्ञान मानव व्यवहार एवं व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन का एक व्यापक एवं प्रभावशाली क्षेत्र है। सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार को विरोधी प्रवृत्तियों के रूप में देखने के स्थान पर उन्हें व्यक्तित्व के पूरक एवं संतुलनकारी आयामों के रूप में समझा जाना अधिक उपयुक्त है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में पारिवारिक परिवेश, सामाजिक परिस्थितियाँ, शिक्षा व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्य एवं मानसिक स्वास्थ्य जैसे कारकों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश एवं बिहार जैसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विविधतापूर्ण राज्यों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय व्यक्तित्व मनोविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध संभावनाओं को विकसित कर सकता है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था में व्यक्तित्व विकास को एक सतत एवं बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाए। शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक संवेदनशीलता, आत्म-अनुशासन, नेतृत्व क्षमता तथा मानसिक दृढ़ता जैसे गुणों के संतुलित विकास को भी समान प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए। ऐसा दृष्टिकोण न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को समृद्ध बनाएगा, बल्कि उन्हें एक उत्तरदायी, संवेदनशील एवं सक्षम नागरिक के रूप में विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अंततः यह कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश एवं बिहार के छात्रों के सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का अध्ययन भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान एवं व्यक्तित्व अध्ययन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शैक्षिक एवं शोधपरक योगदान सिद्ध हो सकता है। भविष्य में इस विषय पर अनुभवजन्य अनुसंधान व्यक्तित्व मापन उपकरणों के विकास, शैक्षिक नीतियों के पुनर्संरचन तथा व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के वैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए उपयोगी आधार प्रदान कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रामनाथ. (2012). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
2. पाठक, पी. डी. (2014). व्यक्तित्व मनोविज्ञान. नई दिल्ली : भारतीय प्रकाशन।
3. सिंह, अरुण कुमार. (2011). आधुनिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।
4. पाण्डेय, के. पी. (2016). मनोविज्ञान के सिद्धान्त. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. नई शिक्षा नीति, भारत सरकार (2020)।
6. हॉल, सी. एस., लिंडज़ी, जी., एवं कैम्बेल, जे. बी. (1998). व्यक्तित्व के सिद्धान्त (Theories of Personality). न्यूयॉर्क: वाइली प्रकाशन।
7. शुल्डज़, डी. पी., एवं शुल्डज़, एस. ई. (2017). व्यक्तित्व के सिद्धान्त (Theories of Personality). बोस्टन: सेंगेज लर्निंग।
8. सैंट्रॉक, जे. डब्ल्यू. (2018). शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology). न्यूयॉर्क: मैकग्रा-हिल एजुकेशन।
9. मंगल, एस. के. (2015). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान (Advanced Educational Psychology). नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग।

10. त्रिपाठी, आर. सी. (2012). भारत में मनोविज्ञान: उभरती प्रवृत्तियाँ एवं अनुप्रयोग (Psychology in India: Emerging Trends and Applications). नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।

